एडिलेड (आस्ट्रेलिया) से सिंगापुर के लिए
क्वान्टास उड़ान से यात्रा के दौरान सन्देश
नवम्बर १३, १९९९

सन्देश संख्या १७

मुद्रायें – स्वाभाविक अभिव्यक्तियाँ

जीवन एवं प्रत्यक्षबोध को न तो पुस्तकोन्मुखी न ही उद्धरणोन्मुखी बल्कि यथार्थोन्मुखी रहने दें। यहाँ तक कि तर्कोन्मुखी भी नहीं क्योंकि तर्क को भी मिथ्याभिमान और निहित स्वार्थ से उत्पन्न एक सीमित दृष्टिकोण से ही प्राप्त किया जाता है जबकि सत्य का कोई बनावटी रूप नहीं है, यह गहन रूप से गतिशील है।

''खेचरी'' मन के निवेश एवं पूँजी के पूर्ण शून्यीकरण से आविर्भूत ''निर्मन'' की प्रचण्ड प्रज्ञा की ओर अग्रसर एक सचेतन अवस्था को इंगित करती है। ''निर्मन'' जड़ बुद्धि की मनोविकृति (विचारहीनता) नहीं है। ''खे'' का अर्थ है ''आकाश'' अर्थात् शून्य और ''चरी'' का तात्पर्य है गतिशीलता। यही कारण है कि खग (पक्षी) को संस्कृत में ''खेचर'' कहा जाता है।

मुद्रा तो तब घटित होती है जब चित्तवृत्ति शरीर की अपनी गलाघोंटू पकड़ शिथिल कर देती है यानी शरीर की अपनी समझदारी विकसित होने लगती है। तब मन अपनी कल्पित कथाओं तथा विकृतियों सहित पूर्ण रूप से समाप्त हो जाता है। इसके पश्चात् वह ''परम पवित्र'' विभिन्न मुद्राओं के माध्यम से अपने अस्तित्व का संकेत देता रहता है। अहं के तुष्टीकरण एवं महिमामण्डन के लिए मुद्राओं का अनुकरण अथवा प्रदर्शन करना उचित नहीं है। ''आध्यात्मिक'' ज्ञान की डींग हाँकना और चिन्ह तथा उपाधियों के आवरण द्वारा अपनी आध्यात्मिक गरिमा का प्रदर्शन करना क्षुद्र मन की चरम अभद्रता है।

जब बुद्ध, रामकृष्ण, संत तुकाराम, रमण महर्षि एवम् अन्य महापुरूषों का परमानन्द की मंगलमय अवस्था में आविर्भाव हुआ तब उनके शरीर पर विभिन्न मुद्रायें स्वाभाविक रूप से घटित हुईं। उन मुद्राओं का अनुकरण कर कोई उस चिन्मय अवस्था की एक झलक भी प्राप्त नहीं कर सकता है जिसमें ये महापुरूष विद्यमान रहते थे। जब कोई भयभीत होता है तो वह दौड़ता है इसलिए दौड़ना भय की एक अभिव्यक्ति अथवा मुद्रा कही जा सकती है। इसका अर्थ यह नहीं है कि जो भी दौड़ते हैं वे सब भय के कारण ही ऐसा करते हैं।

मेंढक जल के अन्दर खेचरी मुद्रा की तरह अपनी जिहा को ऊपर करके निवास करते हैं। अतः आध्यात्मिक मण्डी के मण्डूक–मनोवृत्ति के प्रोत्साहकों से सावधान रहें। एकात्मबोध की अवस्था में रहें जहाँ संवेदी प्रत्यक्षों के ऐन्द्रिक विषयासक्ति में परिवर्तन का पूर्ण रूप से निरोध करते हुए उद्दीपन और अनुक्रिया का एक एकात्मक लय बन जाता है। चित्तवृत्तियों की बोझिल आपाधापी में सत् की मंगलमय अवस्था के अधःपतन को रोकने हेतु सतत जागरूक रहें।

जय श्यामाचरण–तिनकौड़ी–सत्यचरण